शिक्षण का सशक्त माध्यम है थियेटर : प्रोफेसर कुहाड़

महेंद्रगढ़(ब्यूरो)। हकेंवि में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग योजना के अंतर्गत आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला उद्घाटन किया गया। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एजुकेशन की ओर से आयोजित इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के तौर पर राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय, रोहतक के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह उपस्थित रहे।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि थियेटर वह माध्यम है जिसके द्वारा न सिर्फ हम शिक्षण की विधा में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं बल्कि इसके माध्यम से हम अपनी कला, संस्कृति व साहित्य को भी संरक्षित कर सकते हैं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. राजबीर सिंह ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौती बताया। उन्होंने कहा कि इस विषय में बहुत से सुझावों पर बात होती है लेकिन उनकी नजर में कक्षा में अध्यापन सबसे जरूरी है। जब तक अध्यापन के मोर्चे पर कार्य नहीं होगा तब तक उच्च शिक्षा में गुणवत्ता स्थापित करना बेहद मुश्किल है। जहाँ तक थियेटर की बात है तो यह इस दिशा में एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। हरियाणवी लोक कला के विशेषज्ञ व दिल्ली टेक्नालॉजिकल विश्वविद्यालय के सलाहकार डॉ. अनूप लाठर व महाराजा सूरजमल इंस्टीट्यूट, जनकपुरी की डॉ. राजेश गिल ने भी अपने अनुभव प्रतिभागियों से सांझा किए। उद्घाटन सत्र में कार्यशाला की संयोजक प्रो. नीरजा धनखड़ ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग की समन्वयक डॉ. सारिका शर्मा, स्वामी दयानंद सरस्वती चेयर प्रोफेसर रणवीर सिंह, प्रो. अमर सिंह और प्रो. नवल किशोर मौजूद रहे।

दीप प्रज्वलित करके कार्यशाला का शुभारंभ करते प्रो. राजबीर सिंह।

कार्यशाला हकेंवि में 'थियेटर इन एजुकेशन' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का हुआ शुभारंभ, रोहतक के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह रहे मुख्य अतिथि

शिक्षण का सशक्त माध्यम है थियेटर कला : प्रो. आरसी कुहाड़

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

थियेटर कला आज से नहीं बल्कि पुरातन काल से ही शिक्षण का सशक्त माध्यम रही है। जहां तक मैं समझता हूं इस कला के माध्यम से लोगों को अपनी बात समझाना बेहद आसान हो जाता है। यह कहना था हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ का।

उन्होंने अपने ये विचार हकेंवि में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग योजना के अंतर्गत आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए। विवि के स्कूल ऑफ एजुकेशन की ओर से आयोजित इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय, रोहतक के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह थे।

हकेंवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में अपने संबोधन में कहा कि थियेटर वह माध्यम है जिसके द्वारा न सिर्फ हम शिक्षण की विधा में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि इसके माध्यम से हम अपनी कला, संस्कृति व साहित्य को भी संरक्षित कर सकते हैं। कुलपति ने शिक्षा के क्षेत्र में ई-अध्ययन सामग्री के बढ़ते महत्त्व का जिक्र करते हुए कहा कि इस कार्य में प्रो. राजबीर सिंह का योगदान अहम रहा है। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि थियेटर व ड्रामा शिक्षा के क्षेत्र में बेहद महत्त्वपूर्ण है। इसी के साथ लोकसंगीत व साहित्य को केंद्र में रखकर शोध करने की आवश्यकता है।

महेंद्रगढ़. हकेंवि में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि प्रो. राजबीर सिंह व हकेंवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ व अन्य अतिथि।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. राजबीर सिंह ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौती बताया। उन्होंने कहा कि इस विषय में बहुत से सुझावों पर बात होती है लेकिन उनकी नजर में कक्षा में अध्यापन सबसे जरूरी है। इसमें विद्यार्थियों को ऑडियो-वीडियो माध्यम से जोड़ना एक चुनौती है। थियेटर कला इस दिशा में बेहद मददगार साबित हो सकती है। कार्यशाला में अन्य विशेषज्ञों के रूप में हरियाणवी लोक कला के विशेषज्ञ व दिल्ली टेक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय के सलाहकार डॉ. अनूप लाठर व महाराजा सूरजमल इंस्टीट्यूट, जनकपुरी की डॉ. राजेश गिल ने भी अपने अनुभव प्रतिभागियों से साझा किए। कार्यशाला की संयोजक प्रो. नीरजा धनखड़ ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. दिनेश चहल व सुश्री किरण ने किया और धन्यवाद ज्ञापन छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. बीर सिंह ने दिया। पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग की समन्वयक डॉ. सारिका शर्मा, स्वामी दयानंद सरस्वती चेयर प्रो. रणवीर सिंह, प्रो. अमर सिंह, प्रो. नवल किशोर आदि उपस्थित रहे।

उच्च शिक्षण में थियेटर बन सकता है महत्वपूर्ण माध्यम : राजबीर

कार्यशाला का दीप प्रज्जवलित कर शुभारम्भ करते अतिथि • जागरण

जागरण संवददाता, महेंद्रगढ़ : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौती है। इस विषय में बहुत से सुझावों पर बात होती है, लेकिन मेरी नजर में कक्षा में अध्यापन सबसे जरूरी है। जब तक अध्यापन के मोर्चे पर कार्य नहीं होगा, तब तक उच्च शिक्षा में गुणवत्ता स्थापित करना बेहद मुश्किल है। जहां तक थियेटर की बात है तो यह इस दिशा में एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। यह बात राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने बृहस्पतिवार को हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में थियेटर इन एजुकेशन विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर कही।

कार्यशाला का आयोजन मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग योजना के अंतर्गत किया गया है। प्रो. राजबीर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में थियेटर इन एजुकेशन विषय पर कार्यशाला का आयोजन एक सराहनीय कदम है। जहां तक ई-लर्निंग की बात है तो इसमें भी अध्यापन कार्य को कुछ इस तरह से करना होता है कि वह विद्यार्थियों को क्लॉस रूम टीचिंग जैसा ही प्रतीत हो। प्रो. सिंह ने अंत में कहा कि शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने के लिए सबसे पहले यह समझना होगा कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

उद्घाटन सत्र में अपने संबोधन में हकेंवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि थियेटर कला पुरातनकाल से शिक्षण का सशक्त माध्यम रही है। इस कला से लोगों को अपनी बात समझाना बेहद आसान हो जाता है। शिक्षण की बात करें तो यह माध्यम इस विद्या में कुशलता प्रदर्शित करती है।

कार्यशाला में अन्य विशेषज्ञों के रूप में हरियाणवी लोक कला के विशेषज्ञ और दिल्ली टेक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय के सलाहकार डॉ. अनूप लाठर व महाराजा सूरजमल इंस्टीट्यूट, जनकपुरी की डॉ. राजेश गिल ने भी अपने अनुभव सांझा किए। उद्घाटन सत्र में कार्यशाला की संयोजक प्रो. नीरजा धनखड़ ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. दिनेश चहल व सुश्री किरण ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. बीर सिंह ने दिया।

शिक्षण का सशक्त माध्यम है थियेटर कला : प्रो. कुहाड़

कार्यशाला का दीप प्रज्वलित करते प्रो. कुहाड़। मोहन

ह.कें.वि. में 'थियेटर इन एजुकेशन' विषय पर 2 दिवसीय कार्यशाला का हुआ शुभारम्भ

महेन्द्रगढ़, 3 मई (मोहन/परमजीत): थियेटर कला आज से नहीं बल्कि पुरातनकाल से ही शिक्षण का सशक्त माध्यम रही है। जहां तक मैं समझता हूं इस कला के माध्यम से लोगों को अपनी बात समझाना बेहद आसान हो जाता है। ऐसे में यदि शिक्षण की बात करें तो यह माध्यम इस विद्या में कुशलता प्रदर्शित करती है।

यह कहना है हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेन्द्रगढ़ के कुलपति प्रोफैसर आर.सी. कुहाड़का। उन्होंने अपने ये विचार हकेंवि में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की पं. मदन मोहन मालवीय नैशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग योजना के अंतर्गत आयोजित 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एजुकेशन की ओर से आयोजित इस कार्यशाला में मुख्यातिथि के तौर पर राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय, रोहतक के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि थियेटर वह माध्यम है जिसके द्वारा न सिर्फ हम शिक्षण की विद्या में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं बल्कि इसके माध्यम से हम अपनी कला, संस्कृति व साहित्य को भी संरक्षित कर सकते हैं।

कार्यशाला में अन्य विशेषज्ञों के रूप में हरियाणवी लोक कला के विशेषज्ञ व दिल्ली टैक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय के सलाहकार डा. अनूप लाठर व महाराजा सूरजमल इंस्टीच्यूट, जनकपुरी की डा. राजेश गिल ने भी अपने अनुभव प्रतिभागियों से सांझा किए। उद्घाटन सत्र में कार्यशाला की संयोजक प्रो. नीरजा धनखड़ ने 2 दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मंच संचालन डा. दिनेश चहल व सुश्री किरण ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन छात्र कल्याण अधिष्ठाता डा. बीर सिंह ने दिया। इस मौके पर प. मदन मोहन मालवीय नैशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग की समन्वयक डा. सारिका शर्मा, स्वामी दयानन्द सरस्वती चेयर प्रोफैसर रणवीर सिंह, प्रो. अमर सिंह, प्रो. नवल किशोर सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व कार्यशाला में विभिन्न संस्थानों से हिस्सा ले रहे प्रतिभागी उपस्थित रहे।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Fri, 04 May 2018
epaper.punjabkesari.in/c/28389686

'थियेटर इन एजुकेशन' पर कार्यशाला

नारनौल (निस) : थियेटर कला आज से नहीं बल्कि पुरातन काल से ही शिक्षण का सशक्त माध्यम रही है। यह कहना है हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेन्द्रगढ़ के कुलपति प्रोफेसर आरसी कुहाड़ का। वे हकेंवि में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पण्डित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग योजना के अंतर्गत 'थियेटर इन एजुकेशन' विषय पर आयोजित 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि थियेटर वह माध्यम है जिसके द्वारा न सिर्फ हम शिक्षण की विधा में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं बल्कि इसके जरिये हम अपनी कला, संस्कृति व साहित्य को भी संरक्षित कर सकते हैं।

दैनिक ट्रिब्यून Fri, 04 May 2018
epaper.dainiktribuneonline.cc